शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बाल कविताओं में करुण रस का महत्व

सीमा मिस्त्री (शोधार्थी)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

विश्व की श्रेष्ठ कविताओं के मूल में करुण रस ही विद्यमान है। बाल साहित्य या बाल कविताओं में करुण रस की विशेष महत्ता है। इस रस की कविताएँ बच्चों को दूसरों के जीवन के सुख-दुख में भागीदारी करना सिखाती हैं उन्हें बेहतर मनुष्य बनने में भी मदद करती हैं। विभिन्न बाल साहित्यकारों ने इस रस की कविताओं के जरिए बच्चों के मन को छुआ है ताकि वे संवेदनशील बन सकें। करुण रस की कविताओं की महत्ता इससे भी सिद्ध है कि ये कविताएँ हृदय का स्पर्श करती हैं। उसे कोमलता प्रदान करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में बाल कविताओं में करुण रस के महत्त्व पर विचार किया गया है।

भूमिका

बाल साहित्य में सर्वाधिक कविताएँ हास्य एवं वीर रस की मिलती हैं, किंतु बच्चों को दूसरों के प्रति सहृदय बनाने और उन्हें बेहतर नागरिक बनाने की महती जिम्मेदारी करुण रस की कविताएँ उठाती हैं। इसलिए इनकी भूमिका बच्चों के संसार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। बाल साहित्य में करुण रस की कविताओं के सुंदर उदाहरण पर्याप्त हैं, जो बच्चों को अपने आसपास के पेड़ों, परिंदों और मनुष्यों के बारे में सोचने और विचारने का अवकाश देते हैं। बच्चों के लिए करुण रस की कविताओं की कितनी उपयोगिता है इसे लेकर भारतीय बाल साहित्यकारों में निरंतर विमर्श होता रहा है। कुछ साहित्यकारों ने अगर करुण रस की महत्ता को अनदेखा किया है तो कुछ साहित्यकारों ने माना है कि कविता का मूल धर्म ही दूसरों के दुख से द्रवित होना है। ख्यात बाल साहित्यकार निरंकारदेव सेवक अपनी पुस्तक 'बालगीत साहित्य' में लिखते हैं, "काव्य शास्त्रों में वर्णित अनेक रस बाल गीतों के लिए अनावश्यक और बच्चों की दृष्टि से अर्थहीन होते हैं। बच्चों को प्रिय लगने वाले प्रमुख रस पाँच ही हैं : 1 हास्य, 2 वीर, 3 शांत, 4 अद्भुत, 5 वात्सल्य। शृंगार जो रसराज कहलाता है उसके लिए बालगीत साहित्य में कोई विशेष महत्व का स्थान नहीं हो सकता और करुण जिसे एक ही मूल रस बहुत से काव्य मर्मज्ञ मानते हैं उसका भी भारतीय बाल-साहित्य में कोई स्थान नहीं है। विदेशी बाल साहित्य में हमें कारुणिक प्रसंगों पर रचित बालगीत प्राय: मिल जाते हैं, पर भारतीय कला का दृष्टिकोण सदा आशावादी होने के कारण हिंदी साहित्य में कारुणिक प्रसंगों को लेकर बालगीत लिखे ही नहीं गये हैं।"[1] सेवक जी ने 1960 के दशक में यह बात कही थी और उसके बाद हिंदी बाल कविता की यात्रा बहुत आगे बढ़ी है। हिंदी बाल साहित्य में करुण रस की अनुपम कविताएँ रची गई हैं और उन्होंने बच्चों के मन में संवेदना का बीज रोपित करने में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अहम् भूमिका भी निभाई है। महादेवी वर्मा, डॉ. श्रीप्रसाद, प्रभात, लाल्टू, प्रकाश मनु, सुशील शुक्ल, तेजी ग्रोवर, राजेश जोशी की कई कविताओं में करुण रस की अद्भुत व्याप्ति देखने को मिलती है।

कई ख्यात कवियों ने कविता में करुण रस सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है। कविता के इतिहास को देखा जाए तो संसार की पहली कविता भी करुण रस के वशीभूत ही लिखी गई है। क्रौंच पक्षी और वाल्मीकि की कथा हम सभी ने सुनी है कि एक बार वाल्मीकि क्रौंच (सारस) का एक जोड़ा प्रेमालाप में लीन था, तभी किसी बहेलिये ने जोड़े में से नर का वध कर दिया और इससे द्रवित होकर वाल्मीकि के मुख से श्लोक फूटा. 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमरः शास्वती समाध्यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।। अर्थात. निषाद, तुझे कभी शांति न प्राप्त हो, क्योंकि तूने काम में मोहित इस क्रौंच के जोड़े में से एक की बिना किसी अपराध के हत्या कर दी है। यह संसार का पहला काव्य श्लोक था। करुणा ही इस श्लोक का आधार है और यहीं से कविता में इस रस की महत्ता की स्थापना हमें देखने को मिलती है।

भारतीय साहित्य में सभी महत्वपूर्ण कवियों ने करुण रस की महत्ता को प्रतिपादित किया है। तुलसीदास जी ने राम के वनगमन और दशरथ के कैकेयी को वचन के बाद उनके मन की करुणाजनक स्थिति का बहुत ही सुंदर चित्र खींचा है। सूरदास ने कृष्ण के गोकुल से मथुरा चले जाने के बाद गोपियों और ग्वालों के मन का करुण चित्र उकेरा है। जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला आदि कवियों ने भी करुण रस की कविताओं के माध्यम से उदात्त समाज की नींव रखने का प्रयास किया है।

बाल साहित्य में करुण रस

बाल साहित्य में भी करुण रस की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। वस्तुत करुणा के बिना किसी भी श्रेणी का साहित्य रचा ही नहीं जा सकता है। बच्चे अपने आसपास गरीब और निर्बल लोगों को देखते हैं, भूखे-प्यासे और आश्रय तलाशते पशु-पक्षियों को निहारते हैं और दूसरों के दुख में भागीदारी करना बहुत छोटी उम्र से ही सीख जाते हैं और इस तरह उनका परिचय करुणा से हो जाता है। करुणा को सिर्फ वियोग तक सीमित कर देने से ही यह माना जाने लगा है कि बच्चों के लिए इस रस की महत्ता नहीं है, किंतु यह बच्चों के मन में सहानुभूति और मदद का हाथ बढ़ाने का भाव भी पैदा करता है। इसी कारण बचपन से ही इस रस का अपना विशेष महत्व है। करुण रस बच्चों को अपने सहपाठियों के प्रति अधिक उदार और सहिष्णु बनाता है तो उन्हें बेहतर नागरिक बनने में भी मदद करता है। नदी, पेड़, पक्षी, धरा और मनुष्य सभी के प्रति चेतना जगाना ही करुण रस की कविताओं का मूल स्वर होता है।

करुण रस का बाल पाठकों पर प्रभाव

दुःख महसूस करने से बदलता है जीवन

साहित्य में विद्वानों ने प्रिय वस्तु या व्यक्ति से बिछुड़ जाने और फिर मिलन की कोई संभावना न होने पर करुण रस की निष्पत्ति बताई है। विचार किया जाए तो हम पाएँगे कि यह परिभाषा करुण रस के दायरे को बहुत सीमित अर्थों में ही व्यक्त करती है। वे दृश्य या व्यक्ति जिन्हें देखकर मन द्रवित होता है वहाँ करुण रस की निष्पत्ति होना तय है। करुणा स्थायी वियोग

से ही नहीं अपितु दूसरों के प्रति सहानुभूति या मदद का भाव आने पर भी मन में उमड़ आती है। करुणा कविता का बहुमूल्य गुण है जो मनुष्य को सहृदय बनाने का काम करता है। बाल कविताओं में करुण रस की कई कविताएँ देखने को मिलती हैं और इन कविताओं का उद्देश्य बच्चों में मानवीय गुणों का विकास करना है। जब बच्चे दूसरों के दुख को अनुभूत करते हैं तो उससे उनका जीवन भी बदलता है, क्योंकि वे भीतर से अधिक उदार और सहृदय बनते हैं।

दूसरों के प्रति सहृदयता का भाव

बच्चे अपनी दिनचर्या में कई तरह के लोगों को देखते हैं। इनमें वे लोग भी होते हैं जो बहुत छोटे-छोटे काम करके अपना गुजर-बसर करते हैं। इनमें सब्जीवाला, दूधवाला, मोची, रिक्शावाला और धोबी जैसे कई लोग होते हैं। करुण रस की कविताएँ बच्चों को इन सभी के प्रति उदार बनाने का काम करती हैं। सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की बाल कविता 'आइसक्रीमवाला' में गरमी के कठिन दिनों में एक आइसक्रीम वाले की मुश्किलों से अवगत कराती है। इस कविता की पंक्तियाँ देखिए :

'ले लो आइसक्रीम कह रहा
देखो चला आ रहा पथ पर
कड़ी दोपहरी धरती तपती
गरम गरम झोंके लू चलती
वस्त्र भीगकर तन से चिपके
हुआ पसीने से ऐसा तर।
देखो चला[2]

इस कविता में आया वर्णन बच्चों के मन में करुण रस की ही निष्पत्ति कराता है। इस तरह बच्चे दूसरों के बारे में सोचना प्रारंभ करते हैं और उनके प्रति अधिक उदारतापूर्ण व्यवहार भी करते हैं। करुण रस मानवीयता का विस्तार करने वाला रस है। कविता जब इस तरह दूसरों के बारे में सोचने का संस्कार बचपन से रोपती है तो ज्यादा बेहतर दुनिया का स्वप्न साकार हो पाता है। बाल साहित्य में करुण रस की कविताओं के जरिए दो जीवों के बीच संबंध का एक पुल बनता है और वह दुनिया को बेहतर बनाने में मदद करता है।

प्रकृति से जुड़ने की प्रेरणा

कुछ बाल कवियों ने सिर्फ मनुष्यों के प्रति ही करुणा जगाने का काम नहीं किया है बल्कि उन्होंने पेड़-पौधों के प्रति भी बच्चों में करुणा के बीज का रोपण किया है। पेड़ के जीवन को लेकर प्रभुदयाल श्रीवास्तव की इस कविता में करुण रस का प्रयोग देखिए :

'पेड़ मिला था, पेड़ मिला
मुझे राह में पेड़ मिला।
पत्ते सूखे-सूखे थे।
डालों के मन रूखे थे।
नहीं घोंसले कहीं रखे
पंछी उस पर नहीं दिखे।
बोला तना सुबक कर के
मैं तो दुनिया छोड़ चला।
जड़ में सेंध लगाई थी।
विष की दवा पिलाई थी।
हींग रखी या मठा रखा
नहीं किसी को पता लगा।
ऐसे कामों में लेकिन,
आगे है इंसान सदा।
पेड़ हमें वह देते हैं।
जिसको जीवन कहते हैं।
मिले ओसजन पेड़ों से,
छोटे-बड़े अधेड़ों से।
अगर पेड़ न होंगे तो
जीवन देगा कौन भला[3]

इस कविता में एक पेड़ की चिंता है और इसलिए हमें करुण रस की निष्पत्ति देखने को मिलती है। पेड़ों पर हमारे संसार का आधार टिका है और उसका जीवन भी उतना ही जरूरी है जितना मनुष्य का, यह बात समझाने के लिए करुण रस की कविता कितनी ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है। कविता का असर बच्चों के मन को छूता है और वह सारी उम्र उनके साथ भी रहता है इसलिए करुणा से पगी कविताएँ इस दुनिया में हरियाली और पेड़.पौधों को बचाने का आह्वान लिए भी होती है। पेड़ों के बारे में सोचने वाली कविताओं को अगर करुण रस की कविताओं में नहीं रखा जाएगा तो उन्हें किस रस की कविता माना जाएगा।

महान व्यक्तियों की स्मृति से मन का भीगना

किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के निधन या उसके इस संसार से जाने पर पीछे उपजी शून्यता पर भी जब बाल कवियों ने कलम चलाई तो उनकी कलम से करुणा की धारा बह निकली है। किसी की स्मृति में करुण रस की निष्पत्ति हो आना सहज ही है। व्यंक्टेश चंद्र पांडेय की कविता में जब वह महात्मा गाँधी को याद करते हैं तो वहाँ करुण रस की निष्पत्ति देखने को मिलती है। इस कविता की पंक्तियाँ देखिए :

"आज है तेरे निधन पर रो रहा संसार बापू
घोर छाई थी निराशा था घना छाया अंधेरा
दूर तक देता दिखाई था नहीं सुखमय सबेरा
मार्ग दिखलाया तुम्हीं ने ज्योति बन साकार बापू"[4]

जब भी हृदय दु:ख महसूस करता है तो करुणा अपने आप उपज आती है। बाल कविताओं में करुण रस के दर्शन हमें तब-तब होते हैं जब बच्चे दूसरों की वेदना को महसूस करते हैं। बच्चे अपने कुत्ते या किसी बिल्ली के निधन से भी दुखी होते हैं और तब उनका मन करुणा से ही भरा होता है। करुण रस की कविताएँ उन्हें अपने उस भाव को समझने में मदद भी करती हैं।

श्रम का मूल्य समझाती हैं ये कविताएँ

करुण रस की कविताएँ बच्चों को श्रम का मूल्य भी समझाती हैं। वहाँ बहुत छोटेछोटे प्राणियों की बातें हैं जो जीवन में अपना काम करके अपने जीवन और दुनिया को सँवारने में लगे हुए हैं। कवि प्रभुदयाल श्रीवास्तव की कविता 'उनको कहो सफाईवाला' में विचार है कि हम कचरा साफ करने वाले को 'कचरेवाला' कहकर पुकारते हैं जबकि उसे 'सफाईवाला' कहकर पुकारा जाना चाहिए क्योंकि वह सफाई करता है और कचरा तो दूसरे लोग यानी कि हम लोग फैलाते हैं। कवि ने यह स्थापना देकर बच्चों को दूसरों के श्रम का मूल्य समझाने का काम किया है। बच्चों की कविताओं में मनुष्यों ही नहीं बल्कि मधुमक्खी, तितली और अन्य प्राणियों के श्रम की महत्ता को भी स्थापित किया है। करुणा इन कविताओं के मूल में है ताकि यह बात बच्चों के हृदय में अंकित हो जाए। श्रम की महत्ता को स्थापित करने वाली कविताओं में भी करुण रस का सुंदर प्रयोग देखने को मिलता है। प्रकाश मनु की इस कविता में इसी दृश्य के इर्द-गिर्द बुनी गई करुण तस्वीर देखिए और करुण रस की अभिव्यक्ति देखिए :

"मैली झोंपड़ियों के हैं ये
मैले-मैले बच्चे,
उछलते-कूदते, खिल-खिल हँसते
हैं ये कितने अच्छे।
मुझ जैसी इनकी दो आँखें
मुझ जैसे दो हाथ,
नहीं पढ़ा करते पर क्यों ये
कभी हमारे साथ ?

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नहीं हमारे साथ कभी ये
जाते हैं स्कूल,
क्यों इनके कपड़ों पर मम्मी
इतनी ज्यादा धूल ?
ढाबों में बरतन मलते हैं
या बोझा ढोते हैं,
हम स्कूल में होते हैं तब
ये चुप-चुप रोते हैं।
मम्मी, किसने छीने,
वरना ये भी खूब चमकते
जैसे नए नगीने"[5]

बच्चे अगर करुण रस की कविताओं का पाठ नहीं करते हैं या इस रस की कविताओं की तरफ उनका ध्यान नहीं जाता है तो उनके भीतर दूसरों के प्रति संवेदना का विस्तार नहीं हो पाता है। इस तरह की कविताएँ उनके भीतर संवेदना जगाने का काम करती हैं। एक बेहतर समाज और बेहतर विश्व के निर्माण के लिए करुण रस महती भूमिका निभाता है। राजेश जोशी की कविता 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' इसी भावभूमि पर रची गई सर्वश्रेष्ठ रचना है जो सवाल करती है कि बच्चों को भी काम करना पड़ रहा है और उनका मासूम बचपन कुचला जा रहा है।

जीवों के प्रति दया का भाव

करुण रस की कविताओं में गौरैया और बया को लेकर भी कविताएँ हैं जिनमें बताया गया है कि इन जीवों के लिए घर बनाना और जीवित रहना भी कितना कठिन हो गया है। महादेवी देवी वर्मा की कविता 'अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी' में यही भाव है कि आँधी से एक गौरैया का घर टूट गया है और उसे घर बनाने के लिए जगह नहीं मिल रही है तो कवयित्री ने प्रश्न उठाया है कि अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी। इसकी पंक्तियाँ देखिए :

"आँधी आई जोर शोर से
डालें टूटी हैं झकोर से
उड़ा घोंसला अंडे फूटे
किससे दुख की बात कहेगी
अब यह चिड़िया कहाँ रहेगी ?"[6]

इस प्रश्न के जरिए कवयित्री ने बच्चों को सोचने के लिए प्रेरित किया है कि हम चिड़ियों और अन्य प्राणियों के बारे में भी सोचें कि वे कैसे इस दुनिया में अपना जीवन बिताएँगे। हम उनका घोंसला तोड़ देंगे तो वे कहाँ रहेंगे और किस तरह जीवन व्यतीत करेंगे। सुरेश विमल की कविता 'कहाँ बनाए घर गौरैया' भी इसी तरह का भाव लिए है कि घर में सभी के लिए जगह है किंतु गौरैया के घोंसले के लिए जगह नहीं है। इस तरह की कविताएँ बच्चों के मन में दूसरे प्राणियों के प्रति दया का भाव विकसित करती हैं।

बेहतर मनुष्य बनाना

करुणा ऐसा गुण है जो किसी भी बालक की बेहतर व्यक्ति बनने में मदद करता है। सोचिए कि जो व्यक्ति दूसरों के बारे में सोचता है उसे सभी अच्छा मानते हैं। बच्चे जब दूसरों के प्रति दया और सहानुभूति जैसे गुणों को अपने भीतर पाते हैं तो वे ज्यादा बेहतर मनुष्य बनने की दिशा में अग्रसर होते हैं। अपने सहपाठियों की मदद करना, ठंड से ठिठुरते किसी व्यक्ति को मदद उपलब्ध कराना या फिर दुर्घटना में घायल किसी व्यक्ति की मदद करना जैसे गुण बच्चों में करुण रस की कविताओं के जरिए आसानी से आ जाते हैं और इसलिए इस रस की कविताओं का मुख्य उद्देश्य बच्चों को बेहतर मनुष्य बनाना है और इस रस की कविताएँ इस उद्देश्य में बहुत सफल भी होती हैं।

दिविक रमेश की कविता 'यह बच्चा' में एक बच्चा करुणा के वशीभूत ही अपने जैसे दूसरे बच्चे को देखकर अपने पिता से जो सवाल

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पूछता है उसका वर्णन करुण रस की निष्पत्ति कराता है :

"कौन है पापा यह बच्चा जो
थाली की झूठन है खाता।
कौन है पापा यह बच्चा जो
कूडे में कुछ ढूँढ़ा करता।
देखो पापा देखो यह तो
नंगे पाँव ही चलता रहता।
कपड़े भी हैं फटे-पुराने
मैले-मैले पहने रहता"[7]

अपने जैसे दूसरे बच्चे को दयनीय दशा में देखकर बच्चे के मन में विचार का पनपना ही करुण रस का प्रभाव बताता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: करुण रस की कविताओं का लक्ष्य दूसरों के दुख का वर्णन करना ही नहीं है बल्कि वे बच्चों के भीतर एक प्रेरणा पैदा करती हैं कि वे दूसरों की मदद के लिए हाथ बढ़ाएँ। बच्चों के भीतर यह भाव जगाना इस रस की कविताओं का प्रमुख लक्ष्य भी नजर आता है। बच्चे जब करुण रस की कविताओं से द्रवित हो जाते हैं तो वे दूसरों की मदद को निश्चित ही प्रेरित होते हैं। परदुखकातरता अगर करुण रस की कविताओं का स्वभाव है तो दूसरों के लिए मदद का हाथ बढ़ाना उनका उद्देश्य। देखा जाए तो समूचा साहित्य ही करुण रस के आधार पर बुना जाता है। साहित्य में किसी भी पात्र या चरित्र के दुख को देखकर पाठक के हृदय में करुणा का संचार होता है और एक तरह से यह मन का शुद्धिकरण भी करता है। करुण रस मानवीयता का आधार है। सिर्फ मनुष्यों के प्रति ही नहीं बल्कि संसार के अन्य जीवों और पेड़-पौधों के प्रति इस समय करुणा की बहुत ज्यादा आवश्यकता है। समाज में बढ़ते अपराध और अत्याचार बताते हैं कि मनुष्य के भीतर की करुणा का सोता सूखता जा रहा है और इसलिए बच्चों के लिए करुण रस की कविताओं की आवश्यकता आज बहुत ज्यादा जान पड़ती है। करुण रस सिर्फ दूसरों का ध्यान रखने या उन्हें नुकसान न पहुँचाने तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह दूसरों को आदर-सम्मान देने तक भी विस्तार पाता है। करुण रस कविता और साहित्य का प्रमुख आधार है। साहित्य से करुण रस निकल जाए तो साहित्य की उपादेयता पर ही प्रश्न खड़ा हो जाएगा और इस रूप में बच्चों के लिए इस रस का बड़ा महत्व है। बिना करुणा के तो कविता का महत्व ही संकुचित हो जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1 बालगीत साहित्य, निरंकार देव सेवक, प्रकाशक किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ 85
2 कविता कोश, आइसक्रीमवाला, सरोजिनी कुलश्रेष्ठ
3 कविता कोश, पेड़ मिला, प्रभुदयाल श्रीवास्तव
4 बालगीत साहित्य, निरंकार देव सेवक, प्रकाशक किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, पृष्ठ 251
5 मेरी संपूर्ण बाल कविताएँ प्रकाश मनु, पृष्ठ 114
6 बाल साहित्य और आलोचना, अनुज कुमार, रेखा पांडेय, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 174
7 कविता कोश, यह बच्चा, दिविक रमेश